

कैसे करे फसलों को चूहों से बचाने के उपाय

शंकर लाल बिजारणियां¹, हरीश कुमार बिजारणियां², रणजीत सिंह³ एवं निशा निठारवाल⁴

¹विद्यावाचस्पति छात्र कृषि महाविद्यालय स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय
बीकानेर, राजस्थान

²विद्यावाचस्पति छात्र कृषि महाविद्यालय महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
उदयपुर, राजस्थान

³सह. आचार्य कृषि अनुसंधान संस्थान स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर
राजस्थान

चूहों की समस्या किसी विशेष क्षेत्र या फसल तक सीमित नहीं है। इन्हें प्रायः घरों एखेतों व विभिन्न प्रकार के भण्डार गृहों में देखा जा



सकता है। ये घरों में भण्डारित अनाज व अन्य खाद्य पदार्थों को खाकर हानि पहुंचाते हैं तथा उनको मल-मूत्र व बालों आदि से दूषित कर देते हैं साथ-साथ कीमती वस्त्र,

जरूरी कागज व लकड़ी के कीमती सामान को कतर कर क्षतिग्रस्त कर देते हैं। प्लेग जैसा भयंकर रोग भी चूहों द्वारा ही फैलता है। खेतों में चूहे बिजाई से कटाई तक फसलों पर आक्रमण करके काफी हानि पहुंचाते हैं तथा



Rat damage in vegetative stage of rice crop - circular patches



Rat damage in vegetative stage of the crop - circular patches



Characteristic rat damage on rice tiller



Rat droppings contaminated stored rice

अपने बिलों या छिपने के स्थान में अनाज इकट्ठा करके किसानों को सीधा घाटा पहुंचाते हैं। इतना ही नहीं, ये खेतों में सिंचाई हेतु बने नालों नहरों आदि के आसपास बिल बनाकर भारी मात्रा में मिट्टी निकाल देते हैं जिससे पानी का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है



जिसे ठीक करने के लिए किसानों को समय-पर अतिरिक्त धन व समय खर्च करना पड़ता है। अतः चूहों से होने वाली हानि को रोकने के लिए इनके नियंत्रण हेतु सामूहिक तौर पर प्रयास करना अत्यंत आवश्यक है।

चूहा नियंत्रण की विधियां

खेतों में चूहे बिल बनाकर रहते हैं तथा रात के समय खाना खोजने के लिए बाहर निकलते हैं। इनमें प्रजनन क्रिया भी बहुत तेज होती है। एक मादा एक बार में 6-10 बच्चों को जन्म देती है जो तीन मास में

स्वयं बच्चे पैदा करने योग्य हो जाते हैं। इस प्रकार एक जोड़े की संतान वर्षभर में हजार से भी अधिक हो जाती है। इसके अतिरिक्त चूहों में सूंघने, सुनने, खाने और स्वाद चखने की विशेष शक्ति होती है जिसके कारण इनका नियंत्रण इतना आसान नहीं होता। अतः अलग-अलग स्थितियों में तथा फसलों की अवस्था के अनुसार सही समय पर सही विधि का इस्तेमाल करके ही चूहों के नियंत्रण में सफलता पाई जा सकती है। चूहा नियंत्रण की विभिन्न विधियां इस प्रकार हैं:

1. यांत्रिक नियंत्रण

फसल की कटाई के बाद खाली खेतों में पानी लगाने से चूहे बिलों से बाहर आ जाते हैं उस समय इनको डण्डों या लाठियों से मार दें। इसके अलावा पिंजरों की मदद से चूहों को पकड़कर पानी में डुबोकर मार दें। इस कार्य हेतु साफ पिंजरों में चूहे के पसंदीदा खाद्य पदार्थ जैसे गेहूँ, बाजरा या चावल आदि के कटे हुए दाने रखकर इनको चूहों के आने जाने वाले रास्तों में लगाएं।

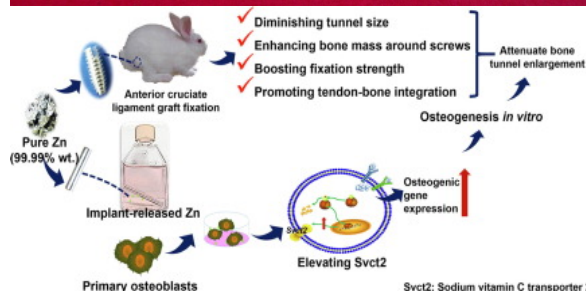


2. रासायनिक नियंत्रण

इसके अंतर्गत रसायनों के प्रयोग से चूहों को एक खुराकीय या बहु खुराकीय जहरीला चारा (बेट) खिलाकर अथवा बिलों का धूमिकरण करके चूहों पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

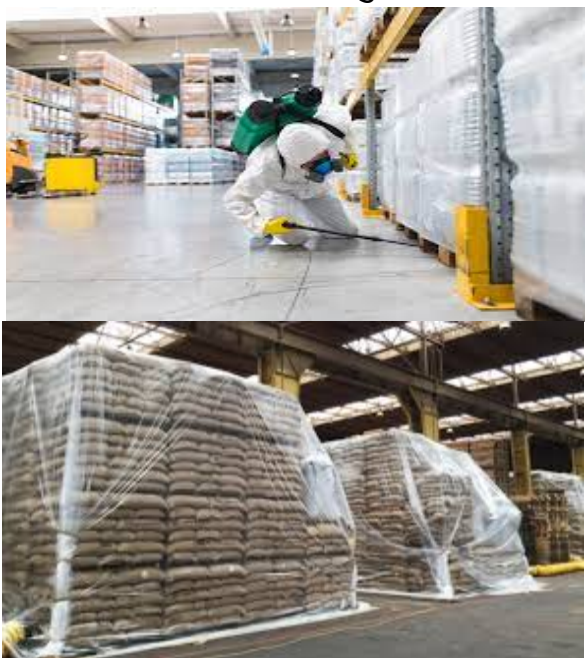
(क) एक खुराकीय जहरीला चारा: यह चारा जिंक फास्फाइड (काली दवाई) नामक दवा की सहायता से तैयार किया जाता है। इसके लिए एक किलोग्राम बाजरा, ज्वार, गेहूं, चना, मक्का के कटे दानों (दलिया) पर 20 ग्राम सरसों का तेल मसल लें और उसमें 25 ग्राम जिंक फास्फाइड किसी लकड़ी की सहायता से अच्छी तरह मिला लें। इस चारे में पानी का प्रयोग कभी मत करें। यदि खेत खाली हैं अथवा फसल छोटी है तब चूहों के बिल आसानी से ढूँढे जा सकते हैं। ऐसी अवस्था में इस चारे की एक चम्मच (10 ग्राम) मात्रा को कागज की ढीली पुड़िया बनाकर बिल में 6 इंच गहरा रख दें तथा बिल का मुँह घास-फूस अथवा मिट्टी से बंद कर दें। खेत में फसल बड़ी हाने पर बिल ढूँढना मुश्किल हो जाता है। ऐसी अवस्था में शुरू में दो-तीन दिन तक बिना जहरीली दवाई वाला चारा अर्थात् केवल सरसों का तेल मसले हुए दानों की 10-10 ग्राम मात्रा को कागज के टुकड़ों पर रखकर प्रति एकड़ खेत में 40 स्थानों पर रखें ताकि चूहे इन दानों को खाने के आदि हो जाए। इसके तुरंत बाद जहरीले चारे को इन्हीं 40 स्थानों पर रख दें। चूहे इन जहर

युक्त दानों को खाकर मर जाएंगे। ध्यान रहे, ये स्थान चूहों के आने-जाने वाली जगह के पास हो तथा मनुष्य व जानवरों की पहुँच से दूर हो।



(ग) धूमिकरण विधि: इस विधि में पहले दिन सभी बिलों को ढूँढकर बंद कर दें। अगले दिन जो बिल खुले हों उनमें एल्युमिनियम फास्फाइड नामक दवा की 3 ग्राम वाली आधी

टिकिया प्रति बिल के हिसाब से डालकर बिलों को मिट्टी में बंद कर दें ताकि जहरीली गैस बिल में फैल जाए और चूहे मर जाएं। शुष्क स्थानों में टिकिया डालने से पहले प्रति बिल 1-2 लीटर पानी डाल दें ताकि नमी के कारण जहरीली गैस जल्दी बनना शुरू हो जाए।



अभियान से समाधान

चूहों के बिल न केवल खेतों में बल्कि गाँव की खाली बंजर भूमि व पंचायती जमीन तक फैले होते हैं तथा अंदर ही अंदर एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। गांव के कुछ लोग यदि चूहे मार भी लें तो चूहे दूसरे खेतों से आकर हानि पहुंचाने लगते हैं। अतः इनके नियंत्रण के लिए गांव स्तर पर किसानों द्वारा मिलकर उचित समय पर चूहामार अभियान

चलाया जाना चाहिए। अभियान चलाने का उचित समय रबी मौसम में नवम्बर-दिसम्बर तथा खरीफ में मई-जून के महीने होते हैं जब खेत खाली होते हैं तथा किसानों को भी फुरसत होती है।

सावधानियां

1. चूहेमार दवा व जहरीला चारा खाने-पीने की वस्तुओं, बच्चों, पालतू जानवरों व पक्षियों की पहुंच से दूर रखें।
2. चूहेमार दवा को शरीर के किसी भाग पर न लगने दें, न ही सांस द्वारा अंदर जाने दें। दवा को दानों पर लगाते।
3. समय दस्तानों का प्रयोग करें अथवा किसी छड़ या खुरपा आदि से इसे मिलाएं।
4. जहरीला चारा बनाने व प्रयोग के बाद शरीर व हाथों को अच्छी तरह साबुन से धोकर साफ कर लें।
5. जहरीला चारा बनाने के लिए घरेलू बर्तनों का प्रयोग न करें तथा बचा हुआ जहरीला चारा व मरे हुए चूहों को मिट्टी में गहरा दबा दें।
6. धूमिकरण का प्रयोग विशेषज्ञों की देखरेख में करना चाहिए तथा उस दौरान धूम्रपान व खानपान नहीं करना चाहिए।